Edit with WPS Office

पूजा भगत

प्रश्न ◆ हिंदी भाषा के विकास के चरण का उल्लेख करें।

या

हिंदी भाषा के विकास की प्रक्रिया का उल्लेख करें

Edit with WPS Office

उत्तर :- हिंदी भाषा का इतिहास लगभग 1000 वर्ष पुराना माना गया है।हिंदी भाषा किसी एक भाषा का नाम न होकर एक भाषा समूह का नाम है। इसके विकास की एक लंबी प्रक्रिया रही है। अपभ्रंश हिंदी के आरंभ के पूर्व साहित्य की भाषा होने के साथ -साथ विकृत हिंदी की अंतिम अवस्था रही ,जिसे 'पुरानी हिंदी' की संज्ञा दी गई। इसके अनेक उपभेद थे ।जैसे - गुर्जरी अपभ्रंश, शौरसेनी अपभ्रंश ,अर्धमागधी अपभ्रंश और मागधी अपभ्रंश आदि।इन्ही समूहों से आगे चलकर हिंदी की अलग- अलग बोलियों की उत्पत्ति हुई।ये बोली समूह ही एकत्रित रूप में '

Edit with WPS Office

हिंदी भाषा' के रूप में जानी जाती है।

हिंदी भाषा का आरंभ आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 1050 संवत माना गया है अध्यय

न की सुविधा की दृष्टि से इसे तीन कालों में विभाजित किया है -

(1) प्रारंभिक काल

(2) मध्यकाल

(3) आधुनिक काल

(1) आरंभिक काल : इसकी समय - सीमा 1050 -1500 ईसवी तक मानी जाती है। इसे हिंदी की प्रारंभिक अवस्था मानी जाती है ।इस

Edit with WPS Office

काल में हिंदी भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव साफ-साफ दिखाई पड़ता है। यही अपभ्रंश मिश्रित हिंदी ही पुरानी हिंदी कहलाई। ङ, ढ़, व,ड़ आदि ध्वनियों की उत्पत्ति इसी काल की देन है।अमिर खुसरो ,विद्यापति ,चंदवरदाई इस काल के प्रमुख कवि रहे।

(2) मध्यकाल :- इसकी समय -सीमा 1500- 1800 ईसवी मानी गई है। भाषा की दृष्टि से इसे स्वर्णकाल की संज्ञा दी गई है।इस काल में हिंदी का स्वरूप और परिष्कृत हो रहा था ।विदेशी भाषाओं के आगमन के कारण उनके शब्द और ध्वनियां हिंदी भाषा मे शामिल हो रहे थे । अपभ्रंश से सुधरती हुई भाषा बोलचाल के रूप में खड़ी बोली का रूप ले रही थी।लेकिन साहित्यिक दृष्टि से तुलसीदास,कबीर और सूरदास के प्रभाव से ब्रज और अवधि ने अपना

Edit with WPS Office

स्थान बनाया ।खड़ी बोली अभी भी संघर्ष की स्थिति में रही। तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई और रसखान इस काल के प्रमुख कवि है।

(3) आधुनिक काल : इस काल का आरंभ 1800 ईसवी से माना गया है।अंग्रेजी सत्ता के अधीन हिंदी का विकास निरंतर होता चला जा रहा था।जिसमे फोर्ट - विलियम कॉलेज का विशेष योगदान रहा। इस काल तक आते - आते हिंदी का स्वरूप और विकसित हुआ।साहित्यिक दृष्टि से भी हिंदी अब ब्रज के प्रभाव से मुक्त होकर खड़ी बोली का स्वरूप धारण कर रही थी ।भारतेंदु हरिश्चंद्र के योगदान से हिंदी की अनेक विधाओं का जन्म भी इसी काल मे हुआ।लल्लूलाल, सदासुखलाल, राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद',राजा लक्ष्मण सेन ,स्वामी दयानंद सरस्वती आदि ने भी हिंदी भाषा के विकास में

Edit with WPS Office

महत्वपूर्ण योगदान दिया। महावीर प्रसाद द्विवेदी,महादेवी वर्मा ,निराला आदि के दौर तक आते - आते हिंदी अपने खड़ी बोली रूप में तैयार हो चुकी थी।

इस प्रकार अनेक अवरोधों को पार करती हुई अपने विकास की प्रक्रिया को पूरी करती रही।अपनी सहज,स्वाभाविक गति से गतिशील होकर विश्व की समर्थ भाषाओं में अपना स्थान बना लिया है। इसके विकास की प्रकिया आज भी जारी है।